एक सच्ची कहानी

# जो पढ़े, वह बढ़े

कृष्णा कुमारी सिंह

सीता देखने में सुंदर थी। जल्दी विवाह हो गया। एक के बाद एक, पांच बच्चों की मां बन गई। खुद दुबली, बीमार, खून की कमी से पीड़ित। कुपोषण के शिकार बीमार, कमज़ोर बच्चे। दुराचारी पति आधी से ज़्यादा कमाई शराब में उड़ा देता। सीता कुछ कहती तो गाली-गलौज के साथ पिटती भी।

तंग आकर दो चार घरों में बर्तनों की सफाई आदि का काम पकड़ लिया। गुज़ारा चलने लगा। पति को पता चला, उसका काम छुड़वा दिया। वह हमारे ही मुहल्ले में रहती थी। थोड़ा बहुत जानती थी। एक दिन मैं उसके घर के सामने से गुजर रही थी। रोने की आवाज सुन कर रहा नहीं गया। अंदर जाकर देखा तो मैं सकते में आ गई। फटे कपड़े, बेतरतीब बाल, शरीर पर मार के निशान।

मैंने उसके लिए चाय मंगाई। हम दोनों ने चाय पी। सहानुभूति पाकर उसने सारी बातें खुल कर बताईं। मैंने उसको अपने यहां काम करने के लिए बुलाया। डरते सहमते वह आने लगी। महीने में 10 दिन भी आती तो भी मैं कुछ नहीं कहती। मैं उसे पढ़ना-लिखना सिखाने लगी। मेरा स्नेह व बढ़ावा पाकर वह पढ़ना सीखने लगी। जल्दी ही वह अपना नाम और कुछ शब्द लिखना सीख गई।

अब धीरे-धीरे उसमें कुछ हिम्मत आ रही थी। उसने मुझसे कहा कि वह घर पर ही कोई धंधा शुरू करना चाहती है। एक दिन एक आदमी चार मुर्गियां बेचने आया। सीता काम करने आई हुई थी।

मैंने उससे पूछा—"तू इन्हें पालकर अंडे बेचने का काम करेगी।" सीता ने उत्साह दिखाया। मैंने उन्हें खरीदकर सीता को दे दिया। सीता अंडे बेचने का काम करने लगी। कुछ अंडों के चूजों से मुर्गियां पालती। उसका धंधा चल निकला।

होली के दिन बहुत खुश-खुश मेरे पास आई। इधर एक महीने से मेरे यहां उसकी बेटी काम पर आने लगी। वह खुद मुर्गियों का धंधा संभालने में लगी थी। उस दिन उसका पति रघुवा भी उसके साथ था। उन लोगों ने बताया कि बैंक से कर्ज़ लेने की अर्जी दे दी है और उन्हें पूरी उम्मीद है कि वह उन्हें मिल जाएगा। वह थोड़ा और बड़े पैमाने पर अंडे और मुर्गी का व्यापार शुरू करेंगें।

"क्यों सीता, अब तो तेरा पति तुझे नहीं पीटता।"

"नहीं दीदी, इसको पता है कि अगर अब मुझे पीटेगा तो मैं नाका जाकर रपट लिखा दूंगी। और दरोगा जी इसकी पिटाई करेंगें। अब तो यह काम में मदद भी करता है। मुझे तो वह गीत याद आ रहा है—

*दुख के दिन बीते रे भैया*
*सुख के दिन आयो री*
*रंग जीवन में नया आयो री*

"दीदी आपका एहसान नहीं भूल सकती। जो इस अबला को सबला बनाया। आप ही के कारण मैंने अपने को पहचानना सीखा। पढ़ना-लिखना सिखाकर आपने नई दिशा दिखाई।" □